a2zpapers.com

Exam. Code : 216304
Subject Code : 5851

M.A. Hindi 4th Semester
GURU TEG BAHADUR JI KI BANI KA VISHESH ADHYAN
Paper—XX, Opt.–(i)

समय—3 घंटे] [पूर्णांक—80

नोट :— प्रस्तुत प्रश्नपत्र **दो** भागों में विभक्त हैं। निर्देशानुसार ही उत्तर दें।

भाग—क

नोट :—यह भाग **दो** उपभागों में विभक्त हैं। निर्देशानुसार उत्तर दें।

उपभाग—I

निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **चार** अवतरणों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए। 4×6=24

(i) साधो मन का मानु तिआगउ
कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ
सुखु दुखु दोनो सम करिजानै अउरू मानु अपमाना
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना
उसतति निदां दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना।।

(ii) मन रे प्रभ की सरनि बिचारो
जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उरधारो
अटल भइओ धू अ जा कै सिमरनि अरू निरभै पदु पाइआ
दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ
जब ही सरनि गही किरपा निधि गज ग्राह ते छूटा
महमा नाम कहा लउ बरनउ, राम कहत बंधन तिह तूटा
अजामलु पापी जगु जाने, निमख माहि निसतारा
नानक कहत चेत चिंतामनि, तै भी उतरहि पारा।।

a2zpapers.com
www.a2zpapers.com
We provide GNDU question papers, PTU question papers, PU question papers

a2zpapers.com

(iii) कहा नर अपनो जनमु गवावै
माइआ मदि बिखिआ रसि रचिओ राम सरनि नही आवै
इहु संसारू सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै
जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै
मिथिआ तनु साचो करि मानिओ, इह विधि आपु बंधावै
जन नानक सोऊ जनु मुकता, राम भजन चितु लावै।।

(iv) बिरधि भइओ सूझे नहीं कालु पहूचिओ आनि
कहु नानक नर बावरे किउ न भजहि भगवानु।।

(v) जतन बहुत सुख के कीए दुख जो कीओ न कोइ
कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ।।

(vi) नर चाहत कछु अउर, अउरै की अउर भई
चितवत रहिओ ठगउर, नानक फासी गलि परी।।

उपभाग—II

निम्नलिखित लघु प्रश्नों में से किन्ही **चार** प्रश्नों के उत्तर दें :— 4×6=24

1. श्री गुरुतेग बहादुर जी की साहित्यिक परिचय दीजिए।
2. श्री गुरुतेग बहादुर जी का वाणी की मूल संवेदना स्पष्ट करें।
3. श्री गुरुतेग बहादुर जी की वाणी की राग योजना पर प्रकाश डालें।
4. श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में पौराणिक संदर्भो का उदाहरण सहित परिचय दीजिए।
5. श्री गुरु तेग बहादुर जी के समाजशास्त्रीय आयाम स्पष्ट कीजिए।
6. भारतीय संस्कृति के संदर्भ में श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी का परिचय दें।

a2zpapers.com
www.a2zpapers.com
We provide GNDU question papers, PTU question papers, PU question paper

a2zpapers.com

खण्ड—ख

नोट :- निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दें। 2×16=32

1. गुरु काव्यधारा की परम्परा और विकास पर विस्तृत निबंध लिखें।
2. 'गुरु तेग बहादुर जी एक युग पुरूष थे' उक्ति के संदर्भ में गुरू तेग बहादुर जी की प्रगतिशीलता पर निबंध लिखें।
3. गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में गुरमत दर्शन का संकल्प विषय पर चर्चा करें।

a2zpapers.com

a2zpapers.com
www.a2zpapers.com
We provide GNDU question papers, PTU question papers, PU question pape